दक्षिण भारत में हिंदी की दशा और दिशा

डॉ एम वेंकटेश्वर
हैदराबाद
9849048156
mannar.venkateshwar9@gmail.com

भारत प्राचीन काल से एक बहुभाषी देश है। इस उपमहाद्वीप में अनादि काल से अनेक भाषाएँ और संस्कृतियाँ पनपती रहीं। विकास की अजस्र धारा अविरल रूप से सदियों से प्रवाहित होती रही। भारत स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी भाषाओं तथा संस्कृतियों की समेवशी परंपरा का सफलतापूर्वक निर्वाह करता रहा ही। राष्ट्र के रूप में अवतरित होने के पश्चात संविधान का निर्माण हुआ। संविधान में भारत में मौजूद सभी भाषाओं को उचित रूप से समादृत किया गया। प्रमुख बाईस भाषाओं को संविधान में उल्लिखित किया गया। संवैधानिक दृष्टि से समान महत्व रखती हैं। इन भाषाओं को राष्ट्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता प्राप्त है। स्वतंत्र भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का गठन किया गया। हिंदी को संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हुआ। अनुच्छेद 343 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों, बैंकों और उपक्रमों के लिए राजभाषा हिंदी व्यवहार में सन् 1950 आ गई। किंतु राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी की स्थिति आज भी संदिग्ध है। इसका कारण, संविधान में हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में सम्मिलित न करना ही है। इसीलिए स्वाधीनता प्राप्ति के इतने वर्षों बाद भी सभी देशवासी एकजुट होकर हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा स्वीकार करने की स्थिति में नहीं हैं। इस सत्य को स्वीकार करना देशवासियों की विवशता है। हिंदी के संबंध में देश दो हिस्सों में विभाजित है। हिंदी को राष्ट्रभाषा मानने वाले लोग भी हैं और इसे संविधान में उल्लिखित एक भाषा मात्र मानने वाले भी हैं। राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए समूचे देश को तीन भागों – क, ख और ग क्षेत्रों में बांटा गया है। 'ग' क्षेत्र में दक्षिण के पांच राज्य, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु आते हैं। हिंदी के संदर्भ में उपर्युक्त पांच राज्य दक्षिण भारत का अर्थ देते हैं। राजभाषा के रूप में हिंदी का कार्यान्वयन संविधान के अनुसार विभिन्न क्षेत्रों के लिए निर्मित नियमों के अधीन तीनों क्षेत्रों में संतोषजनक रूप में हो रहा है। अर्थात राजभाषा हिंदी की स्थिति देश में अविवादित है।

भारत में भाषाओं की संख्या 1000 से ज्यादा हैं जिनमें प्रमुख भाषाओं के अतिरिक्त उपभाषाएं और बोलियां विद्यमान हैं। इनमें हिंदी के प्रयोक्ताओं की संख्या सबसे अधिक है। हिंदी देश में सबसे अधिक समझी और बोली जाने वाली भाषा है। प्रयोक्ताओं का संख्या की दृष्टि से हिंदी ही देश में सर्वाधिक प्रयुक्त भाषा है। संविधान में दर्ज बाईस भाषाओं में अखिल भारतीय स्तर पर भी सामान्य प्रयोजन के लिए हिंदी का ही प्रयोग अन्य भाषाओं की तुलना में सबसे अधिक होता है। इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं। साक्षर एवं निरक्षर सभी लोगों के सामान्य प्रयोजन के लिए हिंदी ही संपर्क भाषा प्रमाणित हो चुकी है। वर्तमान समय में हिंदी का प्रयोग बोलचाल के लिए देश में काश्मीर से कन्याकुमारी तक सफलतापूर्वक किया जा रहा है। दक्षिण भारत में भी स्थानीय भाषा के विकल्प के रूप में हिंदी का प्रयोग होता है। हालाकि शिक्षित शहरी लोग अंग्रेजी को संपर्क भाषा सिद्ध करने का प्रयास करते हैं किंतु दक्षिण भारत में हिंदी की लोकप्रियता में काफी वृद्धि हुई है। भूमंडलीकरण और मुक्त बाजार प्रणाली से संचालित व्यापार एवं वाणिज्य व्यनस्था में स्थानीय भाषाओं के साथ देश की जनसामान्य की भाषा हिंदी की आवश्यकता बढ़ी है। दक्षिण भारत के संदर्भ सें भी बाजार में लाभदायक व्यापार करने के लिए केवल स्थानीय भाषाएं पर्याप्त नहीं होने लगीं। आज व्यापार और वाणिज्य का क्षेत्र किसी एक प्रांत या देश तक सीमित नहीं है। दक्षिण भारत के सभी राज्यों के हर शहर और गांव में व्यापार के हर क्षेत्र में हिंदी में काम करने वाले कामगारों की आवश्यकता आज सबसे अधिक है। आज दक्षिण के पांचो राज्यों में स्थानीय भाषा में प्रवीण लोगों के साथ कमोबेश हिंदी में कार्यक्षमता रखने वाले कामगारों की आवश्यकता स्पष्ट दिखाई दे रही है। इसके लिए जम सामान्य में हिंदी सीखने की आकांक्षा में वृद्धि हुई है।

मनोरेजन, होटल और अतिथ्य सत्कार (Hospitality Management) का क्षेत्र आज एक बहुत बड़े उद्योग के रूप सें विकसित हो चुका है। इसका स्वरूप अखिल भारतीय और वैश्विक हो चुका है। भारत में उत्तर हो या दक्षिण, हर प्रांत में अंग्रेजी के साथ हिंदी में संप्रेषणीयता अनिवार्य होती जा रही है। दक्षिण भारत इसका अपवाद नहीं है। गैरसरकारी असंगठित क्षेत्र में दक्षिण भारत में हिंदी की आवश्यकता में कई गुना वृद्धि हई है। आज हिंदी में कार्यसाधक क्षमता रखने वाले व्यक्तियों की मांग बढ़ गई है। बड़े और छोटे होटलों में हर वर्ग के कर्मचारी तथा अधिकारी सभी चाहे वे किसी भी प्रदेश के हों हिंदी में मेहमानों का स्वागत करते हुए देखे जा सकते हैं। मनोरंजन के क्षेत्र में हिंदी में रेडियो उद्घोषक, समाचार वाचक, कार्यकम निवेदक आदि दक्षिण भारत के सभी राज्यों में देखने में आते हैं।इन सभी राज्यों में हिंदी में मनोरंजन के कार्यक्रम वर्ष भर आयोजित किये जाते हैं। दक्षिण भारत के पांचो राज्यों में

सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर हिंदी उतनी ही लोकप्रिय है जितनी कि देश के अन्य भागों में है। दक्षिणी राज्यों में हिंदी को लोकप्रिय बनाने में हिंदी सिनेमा का अप्रतिम योगदान है। इन राज्यों में हिंदी फिल्में खूब चलती हैं। हिंदी फिल्म उद्योग में दक्षिण भारत के तेलुगु, तमिल,कन्नड़ और मलयालम भाषी अभिनेताओं, गायकों, संगीतकारों, कलाकारों व तकनीशियनों ने महत्वपूर्ण योगदान किया है। हिंदी सिनेमा भारत की भाषिक विविधता में एकता की भावना को उत्प्रेरित करता है।

दक्षिण भारत के सभी राज्यों में व्यापार के क्षेत्र में उत्तर भारतीय हिंदी भाषी समुदायों

(राजस्थानी, मारवाड़ी) के साथ पंजाबी, बंगाली, गुजराती भाषी समुदायों के प्रवासन से इन प्रदेशों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होने लगी। दक्षिण भारत के राज्यों की भाषिक भिन्नता में समन्वय स्थापित करने में हिंदी की भूमिका महत्वपूर्ण है। दक्षिणी राज्यों में केंद्र सरकार के अधिकाधिक उपक्रमों, इसरो, ईसीआईएल, भारतीय डायनमिक्स लिमिटेड, भारतीय रासायनिक प्रौद्यौगिकी संस्थान जैसे अनेक संगठनों की स्थापना से इसमें कार्यरत

वैज्ञानिक एवं अन्य अधिकारीगण बहुभाषी हैं। इनके मध्य और स्थानीय हिंदीतर भाषी लोगों के मध्य वार्तालाप का माध्यम हिंदी ही होती है। दक्षिण भारत में इन संगठनों की उपस्थिति ने हिंदी की स्थिति को सुदृढ़ किया है। इस तरह हिंदी बहुभाषी जनसामान्य के बीच सेतु का कार्य कर रही है।

शिक्षा में हिंदी – दक्षिण भारत के सभी राज्यों में स्कूली स्तर पर हिंदी का शिक्षण द्वितीय अथवा तृतीय भाषा के रूप में किया जाता है। स्वाधीनता संग्राम जब चरम पर था तब महात्मा गांधी ने भारत में अहिंदी भाषियों को हिंदी सीखने के लिए आह्वान किया था। परिणामस्वरूप हिंदी की लहर सारे देश में छा गई थी। गांधीजी के इस आह्वान का प्रभाव दक्षिण भारत पर भी पड़ा। दक्षिण भारतीयों में हिंदी के प्रचार के लिए महात्मा गांधी ने स्वयं सन् 1918 में मद्रास में ' दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा ' की स्थापना की। इसके तीन अन्य केंद्र धारवाड़, एर्णाकुलम, हैदराबाद में स्थित हैं जहां स्नातकोत्तर स्तर हिंदी साहित्य का अध्यापन होता है।

हिंदी का प्रचार-प्रसार देश सेवा और राष्ट्रभक्ति का प्रतीक माना गया। गांधीजी की प्रेरणा से भारत का प्रथम हिंदी माध्यम का स्कूल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी जी ने खोला था। दक्षिण भारत में हिंदी भाषा के प्रचार में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा का महत्वपूर्ण योगदान है। आज भी इस संस्था के हजारों प्रचारक हिंदी सीखने के इच्छुक लोगों को हिंदी सिखाने के कार्य में निमग्न हैं। यह संस्था स्नातक, स्नातकोत्तर तथा शोध के स्तर पर हिंदी के पाठ्यक्रमों का संचालन करती है। इसे संसद के अधिनियम के द्वारा राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया है। दक्षिण भारत के सभी राज्य-संचालित विश्वविद्यालयों और केंद्रीय विश्वविद्यालयों में स्नातक और स्नाकोत्तर (एम ए) शोध (पीएच डी) के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इन विश्वविद्यालयों से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में छात्र एम ए, एम फिल और पीएच डी की उपाधियां प्राप्त करते हैं। समूचे दक्षिण भारत में हिंदी भाषा एवं साहित्य का उच्च शिक्षा के सर्वाधिक केंद्र हैदराबाद (तेलंगाना) में स्थित हैं। हैदराबाद, दक्षिण का द्वार कहलाता है। हैदराबाद बहुभाषी महानगर है। हिंदी, उर्दू और तेलुगु भाषाओं की संगम स्थली है यह। तीन भाषाओं की त्रिवेणी तेलंगाना राज्य में प्रवाहित होती है। भारत का यह प्रतिनिधि शिक्षा एवं अनुसंधान का केंद्र है।इस महानगर में पांच केंद्रीय और छः राज्य विश्वविद्यालय स्थापित हैं। हिंदी का अध्यापन एम ए और पी एच डी उपाधियों के लिए नौ केंद्रों में नियमित रूप से होता है। हैदराबाद स्थित उस्मानिया विश्वविद्यालय (1918 में स्थापित) में सर्वप्रथम स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्यापन सन् 1948 से प्रारंभ हुआ। दक्षिण भारत का यह प्रथम विश्वविद्यालय है जिसे यह गौरव प्राप्त है। इसके अतिरिक्त दक्षिणी राज्यों में आंध्र विश्वविद्यालय (विशाखापट्टनम), श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय(तिरुपति)आंध्र प्रदेश, मद्रास विश्वविद्यालय (चेन्नै), केंद्रीय विश्वविद्यालय (तमिलनाडु), बेंगलोर, मैसूर और धारवाड़ विश्वविद्यालय (कर्नाटक), कोचिन, कालीकट, त्रिवेंद्रम विश्वविद्यालय (केरल) में एम ए और पीएच डी की उपाधियों के लिए बड़ी संख्या में छात्र प्रवेश लेते हैं। पचास और साठ के दशकों से इन विश्वविद्यालयों में काशी (बनारस हिंदू विश्वविद्यालय) से शिक्षा प्राप्त आचार्य हिंदी भाषा एवं साहित्य का अध्यापन करते आ रहे हैं। इन सभी विश्वविद्यालयों में ख्याति प्राप्त हिंदीतर भाषी (तेलुगु,तमिल,कन्नड़ और मलयालम) विद्वान सक्षमतापूर्वक अध्यापन कर रहे हैं। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं के विशेषज्ञ आचार्यों के रूप में अखिल भारतीय स्तर पर इन्हें प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। एस टी नरसिंहाचारी, जनार्दन चेलेर, रामबाबु शर्मा, कर्ण राजशेषगिरि राव, माधव राव, सुंदर रेड्डी. आदेश्वर राव, भीमसेन निर्मल, वाई वेंकट रमणराव, दक्षिणामूर्ति, सरुगु कृष्णमूर्ति, विजयराघव रेड्डी आदि (तेलुगु भाषी), विश्वनाथ अय्यर, रामन नायर, रवींद्रनाथ, अरविंदाक्षन, गोपीनाथन, के विजयन, टी के नारायण पिल्लै आदि (मलयालम भाषी), कुप्पु स्वामी, एस एन गणेशन, वी रा जगन्नाथन आदि (तमिल भाषी), तिप्पैस्वामी, कुसुम गीता, टी आर भट्ट, चंदूलाल, टी आर प्रभाशंकर आदि (कन्नड़ भाषी) आचार्यों ने अकादमिक जगत में दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी साहित्य के अध्ययन, अध्यापन और शोध कार्य को परिपुष्ट किया है। दक्षिण भारत में उत्तर भारत से आकर बसे अनेक हिंदी भाषी विद्वानों का योगदान भी इस प्रदेश में हिंदी भाषा एवं साहित्य के अध्यापन में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आचार्य विजयपाल सिंह, चंद्रभान रावत, विजेंद्रनारायण सिंह, रामकुमार खंडेलवाल, रामनिरंजन पांडे, राजकिशोर पांडे, विष्णु

स्वरूप, श्रीराम शर्मा, वंशीधर विद्यालंकार, कृष्णदत्त, इंदु वशिष्ट, वसंत चक्रवर्ती, ज्ञान अस्थाना, ललित पारिख, सुवास कुमार आदि महानुभवों ने दक्षिण भारत में अपनी विद्वत्ता से विभिन्न स्तरों में हिंदी के अध्यापन को नई ऊंचाई प्रदान की। दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा एवं साहित्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट शोध कार्य भी संपन्न हुआ है जिसकी गुणवत्ता उच्च कोटि की मानी गई है। दक्षिण भारतीय विश्वविद्यालयों से उपाधि प्राप्त असंख्य छात्र देश भर में हिंदी का सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य कर रहे हैं।
दक्षिणी राज्यों के स्कूल के हिंदी अध्यापकों को दक्षिण भाषी छात्रों को हिंदी शिक्षण के लिए हैदराबाद और मैसूर में स्थित केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा की प्रादेशिक शाखाओं में विशेष प्रशिक्षण का प्रावधान है। यह संगठन हिंदीतर भाषी हिंदी शिक्षकों को हिंदी भाषा शिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के उद्देश्य को पूरा करता है।

हिंदी साहित्य को दक्षिण भारतीय साहित्यकारों का योगदान – हिंदी साहित्य को समृद्ध करने में दक्षिण भारत के चारों मातृभाषा समुदाय के अनेक रचनाकारों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान किया है। इनके द्वारा मौलिक लेखन के साथ हिंदी-तेलुगु में परस्पर अनुवाद का कार्य विपुल मात्रा में हुआ है। बालशौरि रेड्डी, आरिगपूड़ि रमेश चौधरी, आलूरी बैरगी, कर्ण राजशेषगिरि राव, आई पांडुरंगराव, आदेश्वरराव, एस सेषन, सुंदरम, बालसुब्रमण्यम, शौरिराजन, तिप्पैस्वामी, गोपीनाथन आदि रचनाकारों ने हिंदी में कहानी, उपन्यास और कविता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मौलिक लेखन कार्य है ।दक्षिण के समकालीन हिंदी रचनाकारों में दीप्ति खंडेलवाल, वेणुगोपाल,रोहिताश्व, ओमप्रकाश निर्मल, राजा दुबे, एम उपेंद्र, प्रतिभा गर्ग, इंदु वशिष्ठ प्रमुख हैं। वर्तमान में कथा साहित्य के क्षेत्र में सच्चिदानंद चतुर्वेदी, एन आर श्याम, पवित्रा अग्रवाल और किशोरी लाल व्यास सक्रिय हैं। कवियों के रूप में ऋषभदेव शर्मा, एम रंगय्या, अहिल्या मिश्र, रमा द्विवेदी, गोविंद अक्षय, नेहपाल सिंह वर्मा, वेणुगोपाल भट्टड़, भंवरीलाल, रामकृष्ण पांडे, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, टी मोहन सिंह, दयाकृष्ण गोयल, सुषमा वैद, विनीता शर्मा, ज्यति नारायण, नरेंद्र राय सुप्रतिष्ठित हैं।
दक्षिण भारत में हिंदी और तेलुगु साहित्य परस्पर दोनों भाषाओं में अनूदित होकर लोकप्रिय हुआ है। दक्षिण की चारों भाषाओं का साहित्य हिंदी में ओर वैसे ही हिंदी साहित्य की प्रसिद्ध कृतियां चारों भाषाओं में विपुल संख्या में हुई हैं। दक्षिण भारत में चारों भाषाओं के श्रेष्ठ हिंदी अनुवादकों की संख्या उल्लेखनीय है। हिंदी की प्रमुख कथा और काव्य कृतियां चारों दक्षिण भारतीय भाषाओं में अनूदित होकर उपलब्ध हो जातीं हैं। कामायनी, उर्वशी, कुरुक्षेत्र
(महाकाव्य) का अनुवाद तेलुगु में आदेश्वर राव द्वारा किया गया है। प्रेमचंद का अधिकांश साहित्य दक्षिण की चारों भाषाओं में अनुवाद के माध्यम से उपलब्ध है। दक्षिण में अनुवाद की परंपरा बहुत सशक्त है। अनुवाद के माध्यम से हिंदी साहित्य की लोकप्रियता दक्षिण भारत में बढ़ी है। उसी प्रकार इसके विपरीत दक्षिणी भाषाओं में रचित साहित्य भी हिंदी में अनुवाद के माध्यम से ही उपलब्ध हो सका है। गौरतलब है कि दक्षिण भारतीय साहित्यकारों द्वारा विपुल मात्रा में हिंदी में साहित्य रचना के बावजूद हिंदी साहित्य के इतिहास में इनके योगदान का उल्लेख नहीं मिलता है।

दक्षिण भारत में हिंदी पत्रकारिता - दक्षिण भारत में हिदी समाचार पत्रों के बहुसंख्य पाठक मौजूद हैं इसलिए प्रमुख हिंदी समाचार पत्र जैसे – दैनिक जागरण, जनसत्ता, अमर उजाला, नवभारत टाइम्स, आज आदि चारों राज्यों में लोकप्रिय हैं। हैदराबाद में हिंदी मिलाप और स्वतंत्र वार्ता – दो दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं जिसके पाठकों की संख्या हजारों में है। साप्ताहिक समाचार पत्र दक्षिण-समाचार की स्थापना ' कल्पना ' से जुड़े वरिष्ठ पत्रकार मुनींद्र ने किया था जो आज भी लोकप्रिय है। हिंदी साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में हैदराबाद का स्थान महत्वपूर्ण है। साहित्य-सेतु, संकल्य, पुष्पक, स्रवंति, गोलकोंडा दर्पण, भास्वर-भारत, समन्वय-दक्षिण आदि त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिकाएं हैदराबाद स्थित विभिन्न साहित्यिक संस्थाएं नियमित रूप से प्रकाशित करती हैं। विभिन्न साहित्यकारों के अवदान पर आधारित इन पत्रिकाओं के विशेषांक विशेष महत्व के हैं। हैदराबाद को दक्षिण भारत का हिंदी का गढ़ माना जाता है। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में साठ के दशक में हैदराबाद से बदरीविशाल पित्ती के संपादन में प्रकाशित ' कल्पना ' की यादें आज भी ताजा हैं। निर्मल वर्मा, अशोक वाजपेई, शमशेर बहादुर आदि हिंदी का गणमान्य रचनाकारों ने साहित्य जगत में 'कल्पना ' से प्रवेश किया। मुक्तिबोध की कविता ' अंधेरे में ' कविता का प्रथम प्रकाशन 'कल्पना ' में ही संभव हो सका। ' कल्पना ' का प्रकाशन सन् 1972 में बंद हो गया। आज भी हिंदी जगत में हैदराबाद की साहित्यिक पहचान ' कल्पना ' से है। इनके अतिरिक्त अन्य दक्षिणी राज्यों से प्रकाशित होने वाली हिंदी पत्रिकाओं में धारा और धरणा, राजस्थान पत्रिका,केरल ज्योति आदि प्रमुख हैं। उपर्युक्त पत्रिकाओं में सृजनशील साहित्य के साथ आलोचनात्मक, समीक्षात्मक, अनूदित, साहित्य के साथ सद्यः प्रकाशित हिंदी कृतियों की समीक्षाएं प्रकाशित होती हैं।

दक्षिण भारत में हिंदी सेवी संस्थाएं - दक्षिण के पांचों राज्यों में अनेक गैरसरकारी स्वच्छंद हिंदी सेवी संस्थाएं हिंदी के विकास और जनसामान्य में हिंदी साहित्य के प्रति रुचि पैदा करने के लिए प्रयासरत हैं। ये संस्थाएं साप्ताहिक, मासिक गोष्ठियों का आयोजन करती हैं जिसमें चर्चा, परिचर्चा, व्याख्यान मालाओं तथा काव्य गोष्ठियों आदि का आयोजन होता है। उक्त आयोजनों में हिंदी के स्थानीय विद्वानों को आमंत्रित किया जाता है। समय- समय पर बाहरी विद्वानों को आमंत्रित कर कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। हैदराबाद

में सर्वाधिक स्वैच्छिक संस्थाएं पचास के दशक से ही सक्रिय हैं। हिंदी लेखक संघ, गीत तांदनी, सांझ के साथी, कादंबिनी क्लब, हिदी साहित्य समिति, समता हिंदी समिति, विश्व हिंदी मैत्री मंच, संकल्य विचार मंच आदि हैदराबाद में हिंदी के उन्नयन के संकल्प के कार्यरत हैं। तेलंगाना सरकार द्वारा संचालित ' हैदराबाद हिंदी अकादमी ' एक महत्वपूर्ण हिंदी सेवी संस्था है, जो हैदराबाद में स्थित है। इस संस्था की गतिविधियों में तेलुगु भाषी हिंदी रचनाकारों के लिए प्रकाशन अनुदान, हिंदी में महत्वपूर्ण ग्रंथों की प्रकाशन योजनाएं, हिंदीतर भाषी तेखकों के श्रेष्ठ लेखन कार्य के लिए वार्षिक पुरस्कार योजना उल्लेखनीय हैं। इसी के अनुरूप अन्य राज्यों के प्रमुख शहरों में भी ऐसी संस्थाएं सक्रिय हैं। आंध्र प्रदेश के विशाखापट्टनम में – विशाखा हिंदी परिषद, हिंदी पत्रकार और लेखक संघ प्रमुख हैं। बेंगलोर में कर्नाटक हिंदी समिति, कर्नाटक महिला हिंदी समिति, श्याम सुंदर गोयंका फाऊंडेशन महत्वपूर्ण हैं। तमिलनाडु और केरल में भी ऐसी ही स्वच्छंद संस्थाएं गतिशील हैं जो हिंदी प्रेमियों के साथ साथ अन्य लोगों में हिंदी के प्रति रुचि जगाने में सफल हुई हैं।

दक्षिण भारत में हिंदी की स्थिति निर्विवाद रूप से उत्तम और सकारात्मक है। उत्तर भारत में दक्षिण भारत के हिंदी विरोधी होने की भ्रामक घारणा घर कर गई है जो कि निराधार है। वर्तमान संदर्भ में हिंदी का विकास देश के अन्य प्रदेशों की अपेक्षा दक्षिण भारत में द्रुत गति से हो रहा है। प्रत्येक दक्षिण भारतीय के मन में हिंदी के प्रति अपरिमित लगाव और प्रेम की भावना मौजूद है।